ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

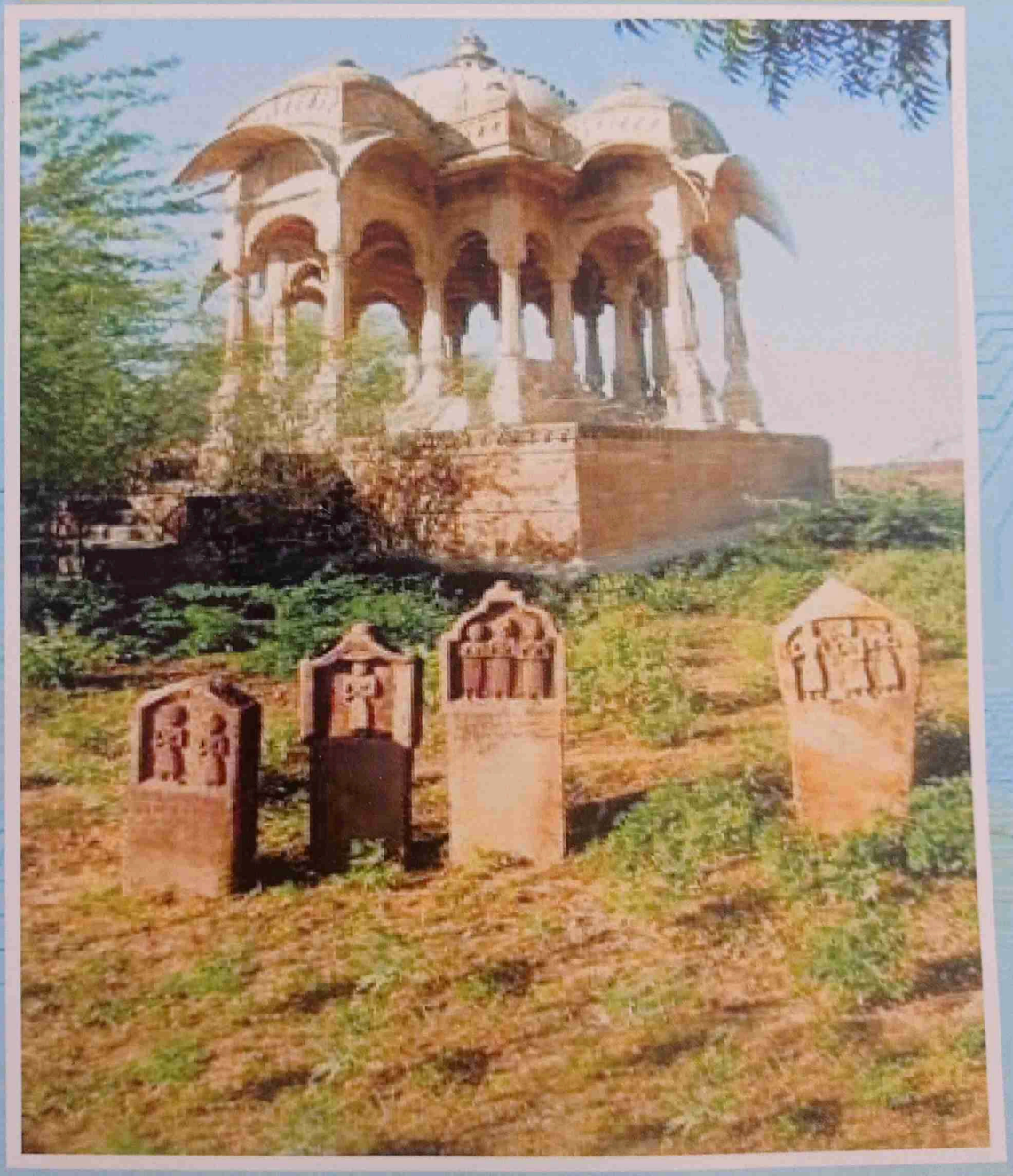

मरू भूमि शोध संस्थान, श्री डूंगरगढ़ (राज.)
MARUBHUMI SHODH SANSTHAN, SRI DUNGARGARH (RAJ.)

JUNI KHYAT

जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष : 11 • अंक 11 No. 01

November 2021

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

श्याम महर्षि
सचिव :
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति)
श्रीडूँगरगढ़ 331803 (बीकानेर) राज.

आलेख सीडी में या निम्न पर ईमेल किया जा सकता है ।

सम्पादकीय कार्यालय :
डॉ. बी.एल. भादानी
रांगड़ी चौक, बीकानेर 334001 (राज.)

editor.junikhyat@gmail.com

Sl.No.	Journal No.	Title	Publisher	ISSN
203		JUNI KHYAT		2278-4632

UGC Journal Details

Name of the Journal : **JUNI KHYAT (Print Form)**
ISSN Number : 2278-4632
e-ISSN Number : NA
Source : **UGC**
Discipline : **Social Science**
Subject : **Social Sciences (all)**
Focus Subject : Cultural Studies
Publisher : Marubhumi Shodh Sansthan, Sri Dungargarh (Bikaner)

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	VIRTUAL REALITY APPLICATION IN TOURISM INDUSTRY: A REVIEW	1
2	समकालीन हिन्दी कहानी में पर्यावरण विमर्श	7
3	GOODS AND SERVICE TAX (GST) - IMPACT, CHALLENGES ON COMMON MAN	16
4	BFSI EDGE IN THE CONTEXT OF BRANCH BANKING	24
5	विवेकी राय की कहानियों की भाषा एवं शिल्प	32
6	CENTRE AND STATE RELATIONS THROUGH UNION BUDGET-2020: CONSTITUTIONAL PROVISION	40
7	THE INTERVENTION OF H5P IN TEACHING AND LEARNING	46
8	FAINTLY COMPATIBLE MAPPINGS IN INTUITIONISTIC FUZZY METRIC SPACE	52
9	खानदानी टूट फूट के प्रकरण में 'यादगारी कहानियाँ'	60
10	FINANCIAL CONTRIBUTION OF NABARD WITH SPECIAL REFERENCE TO MAHARASHTRA	66
11	A STUDY ON OPPORTUNITIES AND CHALLENGES OF RURAL AND URBAN WOMEN ENTREPRENEURS IN KARNATAKA	72
12	FORMULATION AND *IN VITRO* EVALUATION OF FLOATING TABLETS OF ANTIHYPERTENSIVE DRUG	82
13	FORMULATION AND EVALUATION OF LIPOSOME DRUG DELIVERY SYSTEM FOR AMOXICILLINE TRIHYDRATE	94
14	IMPACT OF GOODS AND SERVICE TAX ON MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES IN TUMAKURU – A STUDY	106
15	भगवानदास मोरवाल के 'रेत' उपन्यास में वेश्याओं का स्वर	110
16	ROLE OF CAPITAL MARKET IN INDIAN FINANCIAL SYSTEM	112
17	PREPARATION, EVALUATION & OPTIMIZATION OF NANOPARTICLES COMPOSED OF PANTOPRAZOLE	120
18	FORMULATION AND EVALUATION OF SUSTAINED RELEASE MATRIX TABLET OF BCS CLASS 1 DRUG	135
19	FORMULATION AND EVALUATION OF SUSTAINED RELEASE MATRIX TABLET OF BCS CLASS 1 DRUG	150
20	FORMULATION AND EVALUATION OF OINTMENT CONTAINING DRUG LEVOFLOXACIN	165
21	MICROFINANCE A TOOL FOR WOMEN EMPOWERMENT: A REVIEW OF LITERATURE	175

22	A REVIEW OF CONGESTION MANAGEMENT ADDRESS IN REORIENT POWER SYSTEM	180
23	जनजातीय लोक संस्कृति एवं भू–मंडलीयकरण	185
24	कम्प्यूटर पर काम करने वाले एवं नहीं करने वाले भावी अध्यापकों में सम्प्रेषण कौशल एवं आत्मविश्वास का अध्ययन	188
25	NEW VISTAS FOR LIBRARY BASED INFORMATION SERVICES IN THE ERA OF NEW EDUCATION POLICY	194
26	CHALLENGES BEFORE RURAL WOMEN DURING LOCKDOWN	198
27	COVID19 IMPACT ON INDIAN TOURISM- REVIVAL STRATEGIES IN THE NEW NORMAL	201

Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-11 No.01November 2021

जनजातीय लोक संस्कृति एवं भू–मंडलीयकरण

डॉ.पुष्पराज लाजरस, प्राचार्य,शास.नवीन महाविद्यालय पाली, जिला कोरबा (छ.ग.)
शेखतस्लीम अहमद, सहा. प्राध्यापक वाणिज्य,शास.नवीन महाविद्यालय पाली, जिला कोरबा (छ.ग.)
ईमेल pushparajlazarus1971@gmail.com; tasleem1488@gmail.com

सारांश

सभ्यता की दौड़ में पिछड़े और किन्ही कारणों से पर्वतों व वनों में सीमित–संकुचित रहकर जीवन–यापन करने वाली जातियों को आदिमवासी, आदिवासी, जनजाति आदिम जाति, कबीली आबादी, वन्य जाति, वनवासी, गिरिजन, भूमिपूजन, अनुसूचित जनजाति और अनेक अभिधानों से अभिहित किया गया। जनजाति शब्द प्रचलन में अधिक है, जो अंग्रेजी के ट्राइब का पर्याय है। प्रो. विद्यार्थी के अनुसार'– वर्तमान समय से जनजाति के नाम की अवधारणाओं की चर्चा भारतीय संविधान के आने के बाद विशेष रूप से प्रचलित हो चुका है। जनजातीय संस्कृति प्राचीन परंपरा और रूढ़ जीवन पध्दति के कारण विशिष्ट स्थान रखती है। डॉ. विजय शंकर उपाध्याय के अनुसार –जनजाति शब्द के साथ हमारी कल्पना में एक ऐसी संस्कृति सामने आती है जो वैज्ञानिक विकास से दूर, वर्तमान काल की व्यवहार शैली और भौतिक जीवन से अपरिचित, शान्त और एकान्त में प्रकृति के बीच अवस्थित है। इनकी संस्कृति अभी तक परम्पराओं और रूढ़ियों द्वारा संचालित संस्कार पालती आयी है। इनकी समाजिक मर्यादा और जीवन पध्दति विशिष्ट है। इनके अद्‌भुत रीति– रिवाज, रहन–सहन तथा आचार –विचार विशेष अध्ययन के लिए प्रेरित करते हैं। इस तरह यह जनजाति एक निश्चित भू–खण्ड में निवास करती है, आर्थिक आधार पर संघर्ष करती, रोज कुऑ खोदो और पानी पियों की तरह जीवन जीती, एक भाषा–बोली का व्यवहार करती तथा सुरक्षा हेतु सदैव अपने को तैयार रखती है। इनकी संस्कृति विचित्र और विशिष्ट होती है जो सहस्त्र वर्षो बाद भी बहुत कम बदलती है। विडम्बना यह है कि अर्थकेन्द्रित आधुनिक समाज इन्हें अनुपात्पादक मानती है जबकि सभ्य समाज सदियों से इनका शोषण करती आ रही है। सामान्यतः जनजाति, खानाबदोशी झुण्डों का एक समूह है, जो एक भू–भाग पर रहता है तथा जो सांस्कृतिक समानताओं, सतत् सम्पर्को तथा एक निश्चित सामाजिक हितों की भावना के आधार पर एकता की भावना रखता हो। भारत के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने से पता चलता है कि ब्रितानी सल्तनत ने जहॉ–जहॉ प्रवेश किया, वहॉ के निवासियों को अपने से पृथकदर्शाने हेतु उन्हें नेटिव या ट्राइव की संज्ञा दे दी। भारतीय संविधान में ऐसे लोगों को अनुसूचित जनजातियॉ कहा गया।

बीज शब्द :– जनजातीय संस्कृति, भू–मंडलीयकरण, लोक साहित्य, खानाबदोश, अनुसूचित जनजाति।

प्रस्तावना

लोग संस्कृति का प्रसार कम से कम एक अंचल या क्षेत्र होता है। लोक में नगर और ग्राम दोनों समाहित है। इस तरह यह व्यापक समाज से जुडता है और लोकजीवन की धूप–छॉह से सरोकार रखता है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार–लोक संस्कृति से हमारा अभिप्राय जनसाधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी प्रेरणा स्त्रोत से प्राप्त करती थी जिसकी उत्स भूमि जनता थी। इस संस्कृति के अनुयायी बौध्दिक विकास के निम्न धरातल पर अवस्थित थे। शिष्ट या अभिजात्य संस्कृति, सभ्यता और विकास की दृष्टि से उच्च मानी जाती है। लोक संस्कृति में लोकजीवन की सम्पूर्णता समाहित है। शिष्ट संस्कृति जहॉ विशिष्ट या अभिजात बोध कराती है, वहीं लोक संस्कृति जनसामान्य की संस्कृति कही जाती है। वैदिक काल शिष्ट, उच्च, सम्भ्रान्त या बुध्दिजीवी वर्ग से संबंधित थी और यज्ञादि अनुष्ठानों की व्याख्या से युक्त ऋग्वेद ही इनका आधार था। जनसामान्य की राजनीति, अन्धविश्वास, मंत्र–तंत्र, जादू– टोने, से युक्त अर्थर्ववेद लोकसंस्कृति का आधार हैं। प्रकृति जीव और ब्रम्हा की गम्भीर और दार्शनिक विवेचन करने वाले शिष्ट तथा लोक विश्वास, रूढ़ी, परम्परा, से युक्त ग्रंथ लोक ग्रंथ है। ये मौखिक परम्परा में युगों से प्रवाहित है।

जनजातीय संस्कृति एवं लोक साहित्य

विश्व के किसी भी साहित्य की महत्ता यह है कि वह अपने लोकजीवन का अध्ययन करता है, मानव जीवन एक सतत् सीखने कि प्रक्रिया है।लोक जीवन, भाषा, संस्कृति व आधारभूत सामाजिक सादृश्यताऍ लोकसाहित्य का निर्माण करती है। लोकगीत, किस्से व कहानियॉ जनमानस की स्वतः प्रस्फुटित होने वाली क्रियाओं की अभिव्यक्तियॉ है। दैनिक जीनव की विभिन्न क्रियाओं की सामूहिक रूप में अभिव्यक्ति लोक गीतों के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती रहती है। अलिखित साहित्य की विशेषता यह रही है कि उसका प्रसार व विस्तार, लोक भाषा व सामूहिकता की सीमाओं द्वारा निश्चित हुआ है। लोक गीतों कि

अभिव्यक्ति में सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू का समावेश करता है। जन्म से मृत्युपर्यन्त व्यक्ति विभिन्न क्रियाऍ करता है। इन क्रिया–कलापों को विशेष रसों से सिंचित करने तथा लोकजीवन को मधुरतम् बनाने के प्रयास में मानव, सभ्यता के आदिकाल से

Copyright @ 2021 Author

उन गीतों का सृजन करता आ रहा है। जो ना आह्लादप्रद होते है, वरन् जीवन कि विभिन्न दिशाओं को भी इंगित करतें हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक लोक साहित्य एक उपेक्षित विषय था। राष्ट्रीय निधि सांस्कृतिक थाती के इस रूप को गौरव एवं सम्मान वर्तमान सदी में ही मिला हैं। इस अमुल्य निधि का एक विशेष अंग लोक गीत भी हैं। डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार लोक–साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती हैं, जिसमें –

01. आदिम–मानव के अवशेष उपलब्ध हैं।
02. परम्परागत मौखिक क्रम से लिपीबध्द बोली या भाषागत हो, जिसको किसी कि कृति ना कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो और जो जनमानस कि प्रवृत्ति में समायी हुई हो।
03. कृतित्व हो किन्तु वह लोकमानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो। उसे किसी व्यक्ति के साथ संबंध करते हुए भी लोग उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें।

उक्त परिभाषा के चार प्रमुख तत्व विशेष उल्लेखनीय है।

01. अवशेष
02. मौखिक परम्परा
03. श्रुति और
04. लोकमानस।

लोक– साहित्य का ऐतिहासिक महत्व अपूर्व है यह एक ऐसी खान है, जिसमें बहुरंगी संस्कृति के परतें अत्यन्त दयनीय एवं सम्पीडित दशा में दफन है। मानव जाति का विविध विचार तथा सांस्कृतिक अर्न्तचेतना के विविधता के स्रोतों का यह संगम स्थल है जहॉ यथार्थ के साथ कल्पना तथा स्थानीयता के साथ राष्ट्रीयता का अद्भुत मिश्रण हुआ है। मानव जाति के आदिम विश्वासो एवं विचारों सहित अनगिनत एवं अकथनीय सामाग्री का यह वृहत कोष है। वस्तुतः लोक–साहित्य किसी देश अथवा जाति के वाणी विलास, मस्त– व्यस्त विचार–स्रोतो को समझने अथवा उनसे पूर्णतया परिचित होने का अत्यन्त उत्तम उपकरण है किसी भी देश के लोक– साहित्य के विभिन्न प्रकारों एवं उनके वर्ण्य–विषयों के अवलोकनोपरान्त यह निर्भ्रान्त रूप से कहा जा सकता है कि उसमें वस्तुतः उस देश की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के पर्याप्त चिन्ह विद्यमान रहते है। इसी कारण लोक– साहित्य लोक–संस्कृति का शसक्त संवाहक कहलाता है। लोक जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं जिसका प्रतिबिम्ब किसी न किसी रूप में लोक– संस्कृति में न रहता हो। अतः लोक– साहित्य में निश्चय ही प्राचीन सांस्कृतिक अनुभव संचित रहता है। लोक– साहित्य का वैषयिक निरिक्षण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सांस्कृतिक एकीकरण की जन्मजात प्रवृत्ति ने इसे व्यतिरेचन– शक्ति तथा विविध लक्षण प्रदान किये है। लोक– साहित्य में आदिम मानव–सभ्यता की समस्त वाचिक एवं आंगिक अभिव्यक्तियों के भगनावषेष निहित रहते है।

भारत के मध्य भाग की जनजातियों में भीलों का अपना महत्व है। मध्य प्रदेश की जनजातियों में सबसे अधिक संख्या भीलों की है। मध्यकालीन इतिहास में भी भील सरदारों की गौरवपूर्ण गाथाएँ यत्र–तत्र पढ़ने में बहुत आती है। इस महत्वपूर्ण जनजाति के संबंध में वैसे तो अंग्रेजी भाषा में कंई अध्याय और कुछ ग्रंथ भी लिखे गये है। समाज–शास्त्रियों ने भी इन जनसमूह का अध्ययन किया है। और कुछ ग्रंथ भी प्रकाषित किये है।

भू–मण्डलीयकरण / वैश्वीकरण

वैश्वीकरण आर्थिक सीमाओ का क्रमशः विलोपन है। इसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय एवं अन्तर्देशों के मध्य अन्तः किया को सांस्कृतिक आधार पर दूरगामी प्रभाव डालने का प्रयास किया जाता हैं । वैश्वीकरण के अंतर्गत वैश्वीक ग्राम, वैश्वीक अर्थव्यवस्था, वैश्वीक पर्यावरण आदि का विश्लेषण विभिन्न स्तरों पर करने का प्रयास किया जाता है। वैश्वीकरण वास्तव मे बाजारों अर्थव्यस्था और प्राद्यौगिकियो का एकीकरण है। नये स्थान और समय में संस्कृतियों और समुदायो के एकीकरण और उसे जोड़ने वाले तथा दुनिया को एक वास्तविकता और अधिकाधिक अंत संबंधित बनाने वाले कार्य में वैश्वीकरण को देखा जा सकता है। जनजातीय समाज भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित है। वैश्वीकरण के कारण जनजातीय संस्कृति, अर्थव्यवस्था में कांतिकारी परिवर्तन हुए है।

आज भारत की जनजातीयां एक तीव्र संक्रमण काल से गुजर रही हैं । जनजातीय समाज बाहरी जगत के साथ संपर्क से पूर्ण रूप से वंचित तो कभी नहीं रहा परंतु बाहरी लोगों के इतने अधिक निकट संपर्क में आने का अवसर भी उन्हे पहले कभी नहीं मिल पाया।परिवर्तन की प्रक्रिया ने हीं आज उन्हे एक मोड़ कर लाकर खड़ा किया है।आवागमन और यातायात के साधनो का विकास ,जनजातीय क्षेत्रो में जनसंख्या के दबाव के परिणामस्वरूप उनकी अर्थव्यवस्था का पतन जिससे उन्हे गैर जनजातीय क्षेत्रों की ओर पलायन करना पड़ता है।

जनजातीय क्षेत्रो में खनिज पदार्थो की उपलब्धता का गैर जनजातीय लोगों की जनजातीयों के प्रति बढ़ती हुई रूचि तथा सरकारी एवं गैर सरकारी कल्याणकारी संस्थाओं द्वारा जनजातीय जीवन में व उनके क्षेत्रों में सुधार लाने का प्रयास तथा वैश्वीकरण की प्रक्रिया इसके लिए उत्तरदायी है।

Copyright @ 2021 Author

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक उपागम एवं द्वैतियक तथ्यों पर आधारित है।समाजशास्त्रीयों में गिडेन्स,राबर्टसन, और मिल्टन अग्रणीय विश्लेषक है, जिन्होने भू – मण्डलीयकरण (वैश्वीकरण) को इसकी प्रारंभिक अवस्था में ही परिभाषित किया । गिडेन्स ने कहा वैश्वीकरण (भू – मण्डलीयकरण) एक प्रकार से दुनियाभर के लोगों का सामाजिक संबधों का ताना – बाना है। राबर्टसन कहते है, एक प्रकिया के रूप में भू मण्डलीकरण की आवाधारणा का संबध संसार का सिमट जाना हैं , और यह संसार एक है, इसकी चेतना गहरा जाना है। भू–मण्डलीकरण अपने आप में संम्पूर्ण विश्व की चेतना है। मिल्टन ने 1966 में भू – मण्डलीकरण की संस्कृति के दृष्टिकोण से समझाया है। भू – मण्डलीकरण (वैश्वीकरण) में संसार के बारे में सोचना समझना महसूस करना तथा जानना सभी सम्मिलित है। भू – मण्डलीकरण को एक सांस्कृतिक प्रघटना मानती है।इस संदर्भ में भू – मण्डलीकरण एक दोहरी व्यवस्था है, जिसमें न केवल संसार में होने वाली घटनाएं सम्मिलित है, बल्कि सांस्कृतिक रूपान्तरण के द्वारा विश्व को देखना समझना है।

महत्वपूर्ण यह है कि भू – मण्डलीकरण (वैश्वीकरण) एक जटिल प्रकिया है।यह एक ऐसी प्रकिया है जो अनिवार्य रूप से बहुलवादी है।वैश्वीकरण केवल आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रकिया ही नहीं है, यह बहुआयमी है। विकासशील देश कें लोग भू – मण्डलीकरण (वैश्वीकरण) को आर्थिक और साम्राज्यवादी प्रकिया के रूप में देखतें है।

भारत में भू – मण्डलीकरण का आंरभ सन् 1991 में हुआ था। इसे नये सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक युग का सूत्रपात कहा जा सकता है। भू – मण्डलीकरण (वैश्वीकरण) ने आदिवासी समाज की महिलाओं में सशक्तिकरण का संचार किया है।

महिला सशक्तिकरण वर्तमान समाज में सामाजिक – सांस्कृतिक विकास के लिए विचार विमर्श का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है। जब किसी वर्ष को किसी मुद्दे से जोड़कर विशेष बनाया जाता है उस मुद्दे की ओर सबका ध्यान आकर्षित करना इसलिए वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण के रूप में मनाया गया। स्त्री पुरूष के बीच की खाई को समाप्त करने और जेन्डर समानता स्थापित करने में महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण कदम है। स्त्रीयों को मजबूत बनाने के लिए सरकारी एवं स्वंय सेवी स्तर पर एक साथ प्रयास करने होगें, उन्हे सुरक्षा, समानता और सम्मान देना समाज का दायित्व है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि जनजातीय संस्कृति, एवं लोकसाहित्य पर भू–मंडलीय करण की प्रक्रिया ने व्यापक प्रभाव डाला है। राष्ट्रीय स्तर पर भी जनजातीय संस्कृति एवं लोक साहित्य के संरक्षण, संवर्धन हेतु सतत् प्रयास किये ज रहे हैं। भारत में विशेष पिछड़ी जनजातियों को चिन्हित कर अनेक योजनाएं उनके विकास के लिए बनाई व लागू की जा रही है। जनजातीय संस्कृति एवं लोक साहित्य के प्रति अन्य देशों की उत्सुक्ता, एवं विदेशी शोधकर्ताओं और साहित्यकारों की बढ़ती रूची ने देश के अंदर भी जनजाति केन्द्रित कार्यकलापों को प्रोत्साहित किया है। भारतीय संविधान में जनजातियों को समग्र रूप से अनुसुचित जन जाति के रूप में वर्णित किया गया है, एवं इनके उत्थान के लिए अनेक अधिनियम, योजनाएं, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही अनवरत लागू की जा रही है। जिसके परिणाम निश्चित रूप से आने वाले समय में परिलक्षित होंगें।

संदर्भ सूंची :–

पुस्तकें –

- जनजातीय समाज एवं संस्कृति, नाहीद इरफान, 2016.
- जनजाति जीवन और संस्कृति, नरेन्द्र एन. व्यास एवं महेन्द्र भानावत , 2012.
- मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति, गोपाल भार्गव, 2011.

वेबसाईट–

- www.wikipedia.com
- www.slideshare.com
- www.ignca.gov.in
- www.vikaspedia.in

समाचार पत्र–

- नव भारत,
- दैनिक भास्कर
- हिन्दुस्तान टाईम्स
- हितवाद

Copyright @ 2021 Author